हिन्दी पाक्षिक

# महानगर स्तंभ

RNI NO. RAJHIN/2017/70561

पृष्ठ संख्या.... 2

❐ वर्ष-8 ❐ अंक-7 जयपुर, सोमवार 1 अप्रैल, 2024 ❐ एक प्रति 5 रुपये ❐ कुल पृष्ठ-4

## आधुनिक भारत के निर्माता: डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भारत के निर्माताओं में से एक प्रमुख नाम है-डॉ. भीमराव अम्बेडकर। अम्बेडकर एक कुशल राजनेता और दूरदर्शी विचारक थे। उन्हें बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता है। श्रेष्ठ चिन्तक, ओजस्वी लेखक, तथा यशस्वी वक्ता एवं स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री डॉ. भीमराव अंबेडकर विधि विशेषज्ञ, अथक परिश्रमी एवं उत्कृष्ट कौशल के धनी व उदारवादी व्यक्तित्व थे। सुदृण व्यक्ति के रूप में डॉ. अंबेडकर ने संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. अंबेडकर को भारतीय संविधान का जनक भी माना जाता है। इनकी सेवा के फलस्वरूप डॉ. अम्बेडकर को आधुनिक भारत का निर्माता भी कहा जाता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में हुआ था। उनके पिताजी का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माता का नाम भीमाबाई मुरबादकर था। वे अंबावडे नगर जो आधुनिक महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में है, रहते थे। भीमराव के पिता रामजी अम्बेडकर ब्रिटिश फौज में सूबेदार थे और कुछ समय तक एक फौजी स्कूल में अध्यापक भी रहे। उनपके पिताजी ने भीमराव की पढ़ाई लिखाई पर बहुत ध्यान दिया। उन्होंने स्कूली शिक्षा समाप्त की। फिर कॉलेज की पढ़ाई शुरू हुई। 1907 में मैट्रिकुलेशन पास करने के बाद बड़ौदा महाराज की आर्थिक सहायता से वे एलिफिन्सटन कॉलेज से 1912 में ग्रेजुएट हुए।

### सामाजिक सुधार में योगदान

भीमराव अम्बेडकर सामाजिक उत्थान व सामाजिक समानता के लिए हमेशा प्रय शील रहे। अम्बेडकर ने ऑल इण्डिया क्लासेस एसोसिएशन का संगठन बनाया। सम्पूर्ण भारत में दलित जाति के लोगों ने उनके मन्दिरों में प्रवेश-निषेध एवं इस तरह के अन्य प्रतिबन्धों के विरुद्ध अनेक आन्दोलनों का सूत्रपात किया। परन्तु विदेशी शासन काल में अस्पृश्यता विरोधी संघर्ष पूरी तरह से सफल नहीं हो पाया। विदेशी शासकों को इस बात का भय था कि ऐसा होने से समाज का परम्परावादी एवं रूढिवादी वर्ग उनका विरोधी हो जाएगा। अतः क्रान्तिकारी समाज-सुधार का कार्य केवल स्वतन्त्र भारत की सरकार ही कर सकती थी। पुनः सामाजिक पुनरुद्धार की समस्या राजनीतिक एवं आर्थिक पुनरुद्धार की समस्याओं के साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई थी। जैसे, दलितों के सामाजिक पुनरुत्थान के लिए उनका आर्थिक पुनरुत्थान आवश्यक था। इसी प्रकार इसके लिए उनके बीच शिक्षा का प्रसार और राजनीतिक अधिकार भी अनिवार्य थे। अंतिम समय तक दलित-वर्ग के लिए कार्य किया। सन् 1927 में उन्होंने हिन्दुओं द्वारा निजी सम्पत्ति घोषित सार्वजनिक तालाब से पानी लेने के लिए अछूतों को अधिकार दिलाने के लिए एक सत्याग्रह का नेतृत्व किया। उन्होंने सन् 1937 में बंबई उच्च न्यायालय में यह मुकदमा जीता। आम्बेडकर ने शीघ्र ही हरिजनों में अपना नेतृत्व स्थापित कर लिया और उनकी ओर से कई पत्रिकाएं निकालीं, वह हरिजनों के लिए सरकारी विधान परिषदों में विशेष प्रतिनिधित्व प्राप्त करने में भी सफल हुए।

कुछ साल बड़ौदा राज्य की सेवा करने के बाद उनको गायकवाड़-स्कालरशिप प्रदान किया गया जिसके सहारे उन्होंने अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. (1915) किया। इसी क्रम में वे प्रसिद्ध अमेरिकी अर्थशास्त्री सेलिगमैन के प्रभाव में आए। सेलिगमैन के मार्गदर्शन में आम्बेडकर ने कोलंबिया विश्वविद्यालय से 1917 में पी. एच. डी. की उपाधी प्राप्त कर ली। इसी वर्ष उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स में दाखिला लिया लेकिन साधनाभाव में अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाए। कुछ दिनों तक वे बड़ौदा राज्य के मिलिटरी सेक्रेटरी थे। फिर वे बड़ौदा से बम्बई आ गए। कुछ दिनों तक वे सिडेनहैम कॉलेज, बम्बई में राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर भी रहे। डिप्रेस्ड क्लासेज कांफ्रेंस से भी जुड़े और सक्रिय राजनीति में भागीदारी शुरू की। कुछ समय बाद उन्होंने लंदन जाकर लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स से अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी की। इस तरह विपरीत परिस्थिति में पैदा होने के बावजूद अपनी लगन और कर्मठता से उन्होंने एम.ए., पी एच. डी., एम. एस. सी., बार-एट-लॉ की डिग्रियाँ प्राप्त की। इस तरह से वे अपने युग के सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे राजनेता एवं विचारक थे। उनको आधुनिक पश्चिमी समाजों की संरचना की समाज-विज्ञान, अर्थशास्त्र एवं कानूनी दृष्टि से व्यवस्थित ज्ञान था। अछूतों के जीवन से उन्हें गहरी सहानुभूति थी। उनके साथ जो भेदभाव बरता जाता था, उसे दूर करने के लिए उन्होंने आन्दोलन किया और उन्हें संगठित किया।

1926 में वह बम्बई की विधान सभा के सदस्य नामित किए गए। उसके बाद वह निर्वाचित भी हुए। सन् 1942-46 के दौर में वह गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी की सदस्यता तक पहुँचे। भारत के स्वतंत्र होने पर जवाहर लाल नेहरू के मंत्रिमंडल में विधि मंत्री हुए। बाद में विरोधी दल के सदस्य के रूप में उन्होंने काम किया। भारत के संविधान के निर्माण में उनकी प्रमुख भूमिका थी। वह संविधान विशेषज्ञ थे। अनेक देशों के संविधानों का अध्ययन उन्होंने किया था। भारतीय संविधान का मुख्य निर्माता उन्हीं को माना जाता है। उन्होंने दर्शन, इतिहास, राजनीति, आर्थिक विकास आदि अनेक समस्याओं पर विचार किया जिनका सम्बन्ध सारे देश की जनता से है। अंग्रेजी में उनकी रचनावली रुडॉ. बाबा साहब आम्बेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेज्य नाम से प्रकाशित हुई है। हिन्दी में उनकी रचनावली रबाबा साहब डॉक्टर आम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय्य के नाम से प्रकाशित की गई है।

**संविधान निर्माण**

भारत के संविधान के निर्माण में अंबेडकर ने महवपूर्ण योगदान दिया। वे संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ही एक ऐसे सदस्य थे, जिन्होंने अपने कंधों पर ही संविधान निर्माण का कार्यभार संभाला था। जब संविधान बन गया तब एक-एक प्रति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं पंडित जवाहर लाल नेहरू को दी। उन्हें संविधान, सरल अच्छा लगा। 29 अगस्त 1947 को, अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना कि लिए बनी के संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। अम्बेडकर ने मसौदा तैयार करने के इस काम मे अपने सहयोगियों और समकालीन प्रेक्षकों की प्रशंसा अर्जित की। संघ रीति मे मतपत्र द्वारा मतदान, बहस के नियम, पूर्ववर्तिता और कार्यसूची के प्रयोग, समितियाँ और काम करने के लिए प्रस्ताव लाना शामिल है। संघ रीतियाँ स्वयं प्राचीन गणराज्यों जैसे शाक्य और लिच्छवि की शासन प्रणाली के निदर्श (मॉडल) पर आधारित थीं। अम्बेडकर ने हालांकि उनके संविधान को आकार देने के लिए पश्चिमी मॉडल इस्तेमाल किया है पर उसकी भावना भारतीय है। अम्बेडकर द्वारा तैयार किया गया संविधान पाठ मे संवैधानिक गारंटी के साथ व्यक्तिगत नागरिकों को एक व्यापक श्रेणी की नागरिक स्वतंत्रताओं की सुरक्षा प्रदान की जिनमें, धार्मिक स्वतंत्रता, अस्पृश्यता का अंत और सभी प्रकार के भेदभावों को गैर कानूनी करार दिया गया। अम्बेडकर ने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की वकालत की, और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सिविल सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों की नौकरियों मे आरक्षण प्रणाली शुरू के लिए सभा का समर्थन भी हासिल किया, भारत के विधि निर्माताओं ने इस सकारात्मक कार्यवाही के द्वारा दलित वर्गों के लिए सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के उन्मूलन और उन्हे हर क्षेत्र मे अवसर प्रदान कराने की चेष्टा की जबकि मूल कल्पना मे पहले इस कदम को अस्थायी रूप से और आवश्यकता के आधार पर शामिल करने की बात कही गयी थी. 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान को अपना लिया।

1951 मे संसद में अपने हिन्दू कोड बिल के मसौदे को रोके जाने के बाद अम्बेडकर ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया इस मसौदे मे उत्तराधिकार, विवाह और अर्थव्यवस्था के कानूनों में लैंगिक समानता की मांग की गयी अम्बेडकर ने 1952 में लोक सभा का चुनाव एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे लड़ा पर हार गये। मार्च 1952 मे उन्हें संसद के ऊपरी सदन यानि राज्य सभा के लिए नियुक्त किया गया और इसके बाद उनकी मृत्यु तक वो इस सदन के सदस्य रहे। 1948 में बाबा साहेब मधुमेह से पीड़ित हो गए। जून से अक्टूबर 1954 तक वो बहुत बीमार रहे इस दौरान वे कमजोर होती दृष्टि से भी ग्रस्त रहे। अपनी अंतिम पांडुलिपि बुद्ध और उनके धम्म को पूरा करने के तीन दिन के बाद 6 दिसंबर 1956 को अम्बेडकर का निधन हो गया। 7 दिसंबर को बौद्ध शैली के अनुसार अंतिम संस्कार किया गया जिसमें सैकड़ों हजारों समर्थकों, कार्यकर्ताओं और प्रशंसकों ने भाग लिया। बाबासाहेब अम्बेडकर को भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया है, जो भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है। डा. भीमराव अम्बेडकर का भारत निर्माण में योगदान अविस्मरणीय है।

**- संकलित**

## राज्य में 19 अप्रैल से 1 जून तक रहेगा एग्जिट पोल पर पूर्ण प्रतिबंध

**जयपुर ।** भारत निर्वाचन आयोग ने 19 अप्रैल को सुबह 7 बजे से लेकर 1 जून की शाम 6.30 बजे तक के लिए एग्जिट पोल पर रोक लगा दी है। इस दौरान देश भर में सभी लोकसभा क्षेत्रों में एग्जिट पोल का प्रकाशन और प्रसारण प्रतिबंधित रहेगा। भारत निर्वाचन आयोग के अनुसार राजस्थान सहित अन्य चुनाव वाले सभी राज्यों में मतदान से 48 घंटे पूर्व ओपिनियन पोल या अन्य पोल सर्वे के प्रसारण पर प्रतिबंध रहेगा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने 28 मार्च को बताया कि अधिसूचना के अनुसार एग्जिट पोल करना और एग्जिट पोल के परिणामों को समाचार पत्रों में प्रकाशित या इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से प्रसारित करना अथवा अन्य किसी तरीके से प्रचार-प्रसार करने पर भी पूर्णतया प्रतिबंध रहेगा। उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में किसी ओपिनियन पोल या किसी अन्य प्रकार के मतदान सर्वेक्षण के परिणामों सहित किसी भी निर्वाचन मामले का प्रदर्शन 48 घंटों की अवधि जो इन चुनावों के संबंध में मतदान के समापन के लिए नियत घंटों के साथ समाप्त हुई हो, तक के लिए रोक रहेगी।

भारत निर्वाचन आयोग ने जनप्रतिनिधि कानून 1951 की धारा 126 ए की उपधारा (1) के तहत अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए किसी भी प्रकार के एग्जिट पोल को इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट मीडिया के जरिए या अन्य तरीके से प्रसारित करने पर प्रतिबंध लगाया है।

## जयपुर लोकसभा क्षेत्र से 13 प्रत्याशी एवं जयपुर ग्रामीण लोकसभा क्षेत्र से 15 प्रत्याशी चुनावी मैदान में

जयपुर। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा एवं नाम वापसी की अंतिम तिथि के बाद जयपुर जिले में लोकसभा चुनाव की तस्वीर साफ हो गई है। जयपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र 13 प्रत्याशी एवं जयपुर ग्रामीण लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से 15 प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। जयपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी प्रताप सिंह खाचरियावास, भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी मंजू शर्मा, बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी राजेश तंवर, सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) पार्टी के प्रत्याशी कुलदीप सिंह, राष्ट्रीय समता विकास पार्टी के प्रत्याशी त्रिलोक तिवारी, राष्ट्रीय सनातन पार्टी के प्रत्याशी नरेन्द्र शर्मा, इंडियन पिपुल्स ग्रीन पार्टी के प्रत्याशी प्रदीप वर्मा, राइट टू रिकॉल पार्टी के प्रत्याशी शशांक सिंह आर्य, भीम ट्राइबल कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी एडवोकेट हरिकिशन तिवारी सहित डॉ. असीम वर्मा, योगेश शर्मा, राजीव रोलीवाल एवं हरिनारायण मीणा बतौर निर्दलीय प्रत्याशी मैदान में हैं। वहीं, जयपुर ग्रामीण लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी अनिल चौपड़ा, भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी राव राजेन्द्र सिंह, बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी हनुमान सहाय, रिपब्लिकन पार्टी ऑफइंडिया (ए) पार्टी के प्रत्याशी अजय भट्ट, राइट टू रिकॉल पार्टी के प्रत्याशी आदित्य प्रकाश शर्मा, राष्ट्रीय सवर्ण दल पार्टी के प्रत्याशी योगी जितेन्द्र नाथ एडवोकेट, अंबेडकराइट पार्टी ऑफइंडिया के प्रत्याशी डॉ. दशरथ कुमार हिनूनिया, भीम ट्राइबल कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी एडवोकेट हरिकिशन तिवारी सहित डॉ. ओम सिंह मीणा, कह्वी बोहरा, देवहंस, नेहा सिंह गुर्जर, प्रकाश कुमार शर्मा, डॉ. रामरूप मीणा, राम सिंह कसाना बतौर निर्दलीय प्रत्याशी मैदान में हैं। अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रथम) सुरेश कुमार नवल ने बताया कि नाम निर्देशन पत्र वापसी की अंतिम तिथि के बाद निर्दलीय प्रत्याशियों को चुनाव चिन्ह का आवंटन भी कर दिया गया है।

## संपादकीय

# लोकतंत्र का सबसे बड़ा पर्व 'आम चुनाव'

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतात्रिक देश है। यहां लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था लागू है। जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा सिद्धान्त को अपनाते हुए लोकतंत्र स्थापित है। देश के नागरिकों को वोट देने तथा अपनी सरकार चुनने का अधिकार प्राप्त है। 18 वर्ष आयु पूर्ण होते ही नागरिक मत दे सकता है। अपनी पसंद की सरकार चुन सकता है। लोकतंत्र में जनता ही सर्वेसर्वा होती है। नई सरकार के गठन के लिए हर पांच साल में कार्यकाल पूर्ण होने पर निर्धारित प्रक्रिया एवं नियमों के अधीन चुनाव होते है। देश या प्रदेश में होने वाले आम चुनाव को करवाने की जिम्मेदारी भारत निर्वाचन आयोग की होती है। आयोग का मुख्य कार्य चुनाव प्रक्रिया को स्वतंत्र और निष्पक्ष सम्पन्न कराना होता है। आम चुनाव लोकतंत्र का सबसे बड़ा पर्व होता है। जिसमें सभी मतदाता बढ़-चढ कर भाग लेते है। अपने मत का प्रयोग कर, अपने पसंद की सकार चुनते हैं। इसी अनुक्रम में चुनाव आयोग द्वारा देष में होने वाले चुनावों के लिए कार्यक्रम घोषित किया। राजस्थान में दो चरणों में मतदान होगा। पहले चरण का मतदान 19 अप्रैल तथा दितीय चरण को मतदान 26 अप्रैल को होगा। सभी सीटों के लिए मतगणना 4 जून को होगी। आयोग की तैयारिया जारी है। मजबूत लोकतंत्र के लिए जरूरी है कि हर मतदाता अपने वोट के अधिकार का प्रयोग करे। वोट की ताकत मतदाता के पास सबसे बडी ताकत होती है। अपनी पसंद की सरकार चुनने का यह सबसे बड़ा अधिकार सिर्फजनता के पास ही है। यह सही है कि पांच साल में एक बार आम जनता को अपने अधिकार का प्रयोग करने को मिलता है लेकिन यह अधिकार आम जनता को खास बनाता है। यह लोकतंत्र की सबसे बड़ी विशेषता है। लोकतंत्र में हर एक वोट कीमती होता है। कोई प्रत्याशी एक वोट से जीत जाता है तो कोई एक वोट से हार जाता है। मतदाताओं द्वारा अधिकाधिक मतदान कर लोकतंत्र में अपनी पूर्ण भागीदारी दर्शाई जाती है। यह देश के लोगों में जागरूकता एवं सजगता को भी इंगित करता है। लोकतंत्र के इस सबसे बड़े पर्व को उत्साह के साथ मनाया जाना चाहिए। लोकतंत्र में वोट की ताकत आम जनता को सर्वोपरि बनाती है।

## प्रधानमंत्री को ऑर्डर ऑफ द ड्रुक ग्यालपो से सम्मानित किया गया

**नई दिल्ली।** टेंड्रेलथांग, थिम्पू में आयोजित एक सार्वजनिक समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भूटान के राजा द्वारा भूटान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ऑर्डर ऑफद ड्रुक ग्यालपो से सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री मोदी पहले विदेशी नेता हैं जिन्हें ये प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया है। भूटान के राजा ने दिसंबर 2021 में ताशीछोडजोंग, थिम्पू में आयोजित भूटान के 114वें राष्ट्रीय दिवस समारोह के दौरान ये पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की थी। ये पुरस्कार भारत-भूटान की मित्रता को सुदृढ़ करने में प्रधानमंत्री मोदी के योगदान और उनके जन केंद्रित नेतृत्व को मान्यता देता है। इसके प्रशस्ति पत्र में उल्लेख है कि ये पुरस्कार प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एक वैश्विक शक्ति के रूप में भारत के उभार का सम्मान करता है और भारत के साथ भूटान के विशेष बंधन को सेलिब्रेट करता है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व ने भारत को परिवर्तन के पथ पर अग्रसर किया है और भारत का नैतिक आधिपत्य और वैश्विक कद बढ़ा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि ये पुरस्कार भारत के 1.4 अरब लोगों को दिया गया सम्मान है और दोनों देशों के विशेष और अद्वितीय संबंधों का प्रमाण है। पूर्व में स्थापित रैंकिंग और परंपरा के अनुसार, ऑर्डर ऑफद ड्रुक ग्यालपो को लाइफटाइम अचीवमेंट के एक अलंकरण के तौर पर स्थापित किया गया था और ये भूटान का सर्वोच्च सम्मान है जो सब सम्मानों, अलंकरणों और पदकों में सर्वोपरि है।

# अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संगठन (आईएलओ)

अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संगठन (आईएलओ) एक एजेंसी है जो संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था है। इसमें लगभग 185 से अधिक सदस्य देश हैं। विभिन्न वर्गों के बीच में शांति प्रचारित करना, मजदूरों के मुद्दों को देखना, राष्ट्र को विकसित बनाने के लिये, उन्हें तकनीकी सहायता प्रदान करना आदि कार्य किए जाते है। आई एल ओ को वर्ष 1969 में इसे नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मजदूर वर्ग के लोगों के लिये अंतरराष्ट्रीय नियमों के उल्लंघन की सभी शिकायतों को ये देखता है। यहां त्रिस्तरीय संचालन व्यवस्था है जिसमें सरकार, नियोक्ता और मजदूर का प्रतिनिधित्व करना सरकारी अंगों और सामाजिक सहयोगियों के बीच मुक्त और खुली चर्चा उत्पन्न करने के लिये, अंतरराष्ट्रीय श्रमिक कार्यालय के रुप में अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संगठन सचिवालय कार्य करता है। अंतरराष्ट्रीय श्रमिक सम्मेलन, स्वीकार करना या कार्यक्रम आयोजित करना, मुख्य निदेशक को चुनना, मजदूरों के मामलों के बारे में सदस्य राज्य के साथ व्यवहार, अंतरराष्ट्रीय श्रमिक कार्यालय कार्यवाही की जिम्मेदारी के साथ ही जाँच कमीशन की नियुक्ती के बारे में योजना बनाने या फैसले लेने के लिये इसके संचालक संस्था को अधिकार है। संचालक मण्डल कार्यकारिणी परिषद् है। यह एक त्रिपक्षीय संस्था है जिसके इसके पास लगभग 28 सरकारी प्रतिनिधि हैं, 14 नियोक्ता प्रतिनिधि और 14 श्रमिकों के प्रतिनिधि हैं। अन्तरराष्ट्रीय श्रम सम्मेलन वर्ष में एक बार जेनेवा में बुलाया जाता है। यह सम्मेलन संगठन की नीति निर्धारित करने वाली उच्चतम संस्था है।

# राजभवन में राजस्थान स्थापना दिवस का हुआ आयोजन

**जयपुर।** राजभवन में 30 मार्च को राजस्थान का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। राज्यपाल कलराज मिश्र, मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा सहित प्रदेश के विभिन्न पंथ, मजहब के लोग, गणमान्य जन विशेष रूप से उपस्थित रहे। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के कलाकारों ने इस दौरान गीत, नृत्य, लोक नाट्य की प्रस्तुतियों में राजस्थान की संस्कृति का गौरव गान किया। कलाकारों ने समारोह में रामकृवंदना करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की मनोहारी छवि से भी साक्षात् कराया।

आरंभ में राज्यपाल कलराज मिश्र ने राजस्थान निर्माण के विभिन्न चरणों, रियासतों के एकीकरण से बने आधुनिक राजस्थान और यहां के लोगों की जीवटता की चर्चा करते हुए राजस्थान में सात वार और नौ त्योहार की संस्कृति की भी विशेष रूप से चर्चा की। उन्होंने कहा कि उत्सवधर्मिता में यहां के लोगों ने विषम भौगोलिक परिस्थितियों में भी जीते हुए अभावों में भी पर्व, तीज/त्योंहार और संस्कृति के भाव भरे है। उन्होंने राजस्थान की पर्यटन विरासत को महत्वपूर्ण बताते हुए पधारो म्हारे देश की मनुहार के जरिए यहां के चित्ताकर्षक पर्यटन स्थलों पर पर्यटक आमंत्रण के अधिकाधिक प्रयास करने पर भी जोर दिया।मिश्र ने कहा कि राजस्थान भक्ति और शक्ति का संगम प्रदेश है। उन्होंने महाराणा प्रताप के शौर्य, भामाशाह की दानवीरता, पन्नाधाय के बलिदान को स्मरण करते हुए कहा कि गौरवमय राजस्थान का स्थापना दिवस सद्भाव की हमारी संस्कृति को सहेजने का है। उन्होंने राजस्थान दिवस पर संकल्पित होकर राज्य के सर्वांगीण विकास में सभी की भागीदारी सुनिश्चित करने पर जोर दिया।

राजस्थान स्थापना दिवस पर एक घंटे तक चले इस रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की राज्यपाल कलराज मिश्र और मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने सराहना की। उन्होंने कहा कि कलाएं इसी तरह मन को रंजित कर हमें भाव-संवेदनाओं में जीवंत करती है। पूर्व में राज्यपाल के सचिव गौरव गोयल ने आगंतुकों का स्वागत किया। सभी का आभार राज्यपाल के प्रमुख विशेषाधिकारी गोविन्द राम जायसवाल ने जताया।

## कलाकारों ने बिखरे राजस्थान की पारंपरिक संस्कृति के रंग

राजस्थान स्थापना दिवस की शुरुआत कलाकारों ने पारंपरिक राजस्थानी वाद्य यंत्रों के मेल से लंगा, मांगणियार द्वारा बनाई मधुर धुन डेजर्ट सिंफनी में सजे निबुड़ा गीत से की। इसमें सिंधी सारंगी, मोरचंग, अलगोजा, खड़ताल, मंजीरा, झांझ आदि का माधुर्य लुभाने वाला था। इसके बाद जयपुर घराने के कथक नृत्य में गणेश वंदना की गई। संस्कृति की विभिन्न छवियों संग बाद में कलाकारों ने पश्चिमी राजस्थान के प्रसिद्ध आंगी गैर की भावकृभरी प्रस्तुति दी। इसमें कलाकारों ने वृताकार घेरे में ढोल थाली की थाप पर हाथ में छड़ियां लिए पारंपरिक परिधानों में गैर खेली। राजस्थान का पारम्परिक घूमर नृत्य और भवाई प्रस्तुत करते कलाकारों ने जहां लोक गीतों संग नृत्य की मोहक छटाएं बिखेरी वहीं सहरिया स्वांग के अंतर्गत कलाकारों द्वारा बॉडी पेंट लगाकर सिर पर पत्तियां ओढ़े किया आदिवासी करतब मोहक था। राजस्थान के पार्म्परिक सपेरा समुदाय द्वारा किया जाने वाला कालबेलिया नृत्य के अंतर्गत कलाकारों का अंग विन्यास चकित करने वाला था। कलाकारों ने प्रकृति और जीवन से जुड़े सरोकारों में राजस्थान की धरती से जुड़े शृंगार की इस दौरान भावाभिव्यक्ति की। मयूर नृत्य के अंतर्गत कलाकारों ने जहां भगवान श्री कृष्ण और राधा के अलौकिक प्रेम को दर्शाया वहीं पिछाले के अंतर्गत रामकृवंदना कर भगवान श्री राम के पावन स्वरूप और उनके जीवन चरित्र का विरल गान किया।


भगवान श्री झूलेलाल अवतरण दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

चन्द्र प्रकाश खेतानी
(एडवोकेट)
राज. उच्च न्यायालय
मो: 99283-35592
93145-05592

भगवान श्री झूलेलाल अवतरण दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

दौलत त्रिलोकानी
(अध्यक्ष)
युवा जागृति संगठन
मो: 9982944038

भगवान श्री झूलेलाल अवतरण दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश शर्मा
एडवोकेट
राजस्थान उच्च न्यायालय

श्रीमती चेतना शर्मा
एडवोकेट
राजस्थान उच्च न्यायालय

# विराट सिंधु मेला में सिंधी संस्कृति हुई साकार

**जयपुर।** चेटीचंड सिंधी मेला समिति महानगर, जयपुर के तत्वावधान में 31 मार्च को विराट सिंधु मेले का आयोजन सूरज मैदान में हुआ। अध्यक्ष अशोक सेवानी ने बताया कि अमरापुर के संत मोनू राम जी और संत मंडली द्वारा धर्मध्वजा फहरा कर मेले की शुरुआत हुई। मेला उप संयोजक हितेश आडवाणी ने बताया कि खैरथल की दीपक लखवानी और पार्टी ने लाल जो दीवानें असां पहिंजो साईं गोल्हे खंयो आहे....., चेटीचंड असांजे लाल जो आहे...., जोत अंदर तुहिंजी बरे.... आदि सिंधी गीतों से सभी को सराबोर किया। तुलसी संगतानी के अनुसार मेले में श्री राम दरबार की भव्य झांकी लोगों को आकर्षित किया। भगवान श्री झूलेलाल के मनोहारी मंदिर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उमड़े। सिंधु नदी की झांकी पर महिलाओं ने पूजा अर्चना की। नन्हें नन्हें बच्चों ने रंग भरो प्रतियोगिता में उत्साह से भाग लिया। महिलाओं के लिए सिंधी व्यंजन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। सिंधी पकवान साई भाजी, मीठी मानी, तहरी, सेयल फुल्का जैसे व्यंजनों से सूरज मैदान महक उठा। पल्लव प्रतियोगिता के प्रतिभागियों ने पल्लव प्रार्थना कर सनातन धर्म की महिमा गाई। गौ, कन्या और ब्राम्हण की रक्षा की बात की और विश्व के कल्याण की कामना की। विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। सिंधी गोठ (गांव) की झांकी का मनोहारी दृष्य था। सुंदर बैंड ने मधुर स्वर लहरियां बिखेरीं। श्री अमरापुर दरबार की ओर से डोढा चटनी प्रसाद, प्रसिद्ध सिंधी व्यंजन सिंधी कढ़ी चावल का वितरण हुआ। बच्चों के लिए हाथी और घोड़े की सवारी और झूले आदि लगाए गए थे। विभिन्न खाने पीने की स्टॉल्स पर खासी भीड़ रही। मेले में विधायक रफीक खान, पार्षद स्वाति परनामी, हरदीप सिंह चहल सहित समाज के किशोर सचदेव, नरेंद्र मूलचंदानी, प्रमोद नरयानी, विजय बालानी, शंकर दुलानी, छबल दास, वासदेव खेमानी, ललित राजू, राजकुमार संगतानी, लक्ष्मण पुरस्वानी, चंदी राम राघानी, अमर गुरबाणी, सुरेश जयचंदानी, सुरेश हंसराजनी सहित कई समाज बंधु उपस्थित थे। डॉक्टर शंकर बसंदानी, डॉक्टर हरीश तलरेजा सहित अन्य को सम्मानित किया गया। भाजपा सांसद प्रत्याशी मंजू शर्मा, समाज सेवक रवि नय्यर भी मेले में शामिल हुए।

# भगवान श्री झूलेलाल का अवतरण दिवस है चेटीचण्ड

चेटीचण्ड सिन्धी समाज द्वारा बड़ी धूम-धाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। वेदों में वर्णित जल-देवता, वरुण का अवतार माना जाता है। वरुण देव को सागर के देवता, सत्य के रक्षक और दिव्य दृष्टि वाले देवता के रूप में सिंधी समाज भी पूजता है। विश्व में चैत्र माह की चंद्र तिथि पर भगवान झूलेलाल का अवतरण दिवस मनाया जाता है।

भगवान झूलेलाल के अवतरण की एक कथा है। शताब्दियों पूर्व सिन्ध प्रदेश में मिरक शाह नाम का एक राजा राज करता था। राजा बहुत असहिष्णु प्रकृति का था। हमेषा अपनी प्रजा पर अत्याचार करता था। इस राजा के शासनकाल में सांस्कृतिक और जीवन-मूल्यों का कोई महत्व नहीं था। सिन्ध प्रदेश राजा के अत्याचारों से त्रस्त था। उन्हें कोई ऐसा मार्ग नहीं मिल रहा था जिससे वे इस क्रूर शासक के अत्याचारों से मुक्ति पा सकें। मिरक शाह के आतंक ने जब जनता को मानसिक यंत्रणा दी तो जनता ने ईश्वर की शरण ली। सिन्धु नदी के तट पर ईश्वर का स्मरण किया तथा वरुणदेव उडेरोलाल ने जलपति के रूप में मत्स्य पर सवार होकर दर्शन दिए। तभी नामवाणी हुई कि अवतार होगा एवं नसरपुर के भक्त रतनराय के घर माता देवकी की कोख से उपजा बालक सभी की मनोकामना पूर्ण करेगा। समय बीता और नसरपुर के ठाकुर रतनराय के घर माता देवकी द्वारा चैत्रमास विक्रम संवत 1007 चन्द्र दिवस, शुक्रवार के दिन संध्या समय कृष्णावतार भगवान श्री झूलेलाल का जन्म हुआ। बालक का नाम उडेरोलाल रखा गया। इस चमत्कारिक बालक के जन्म का हाल जब मिरक शाह को पता चला तो उसने अपना अंत मानकर इस बालक को समाप्त करवाने की योजना बनाई। बादशाह के सेनापति दल-बल के साथ रतनराय के यहाँ पहुँचे और बालक के अपहरण का प्रयास किया, लेकिन झूलेलाल ने अपनी दिव्य शक्ति से बादशाह के महल पर आग का कहर बरपा दिया। मिरक शाह की फौजी ताकत पंगु हो गई। उन्हें उडेरोलाल सिंहासन पर आसीन दिव्य पुरुष दिखाई दिया। सेनापतियों ने बादशाह को सब हकीकत बयान की। जब महल भयानक आग से जलने लगा तो बादशाह भागकर झूलेलाल जी के चरणों में गिर पड़ा।

उडेरोलाल ने किशोर अवस्था में ही अपना चमत्कारी पराक्रम दिखाकर जनता को ढाँढस बँधाया और यौवन में प्रवेश करते ही जनता से कहा कि बेखौफ अपना काम करे। उडेरोलाल ने बादशाह को संदेश भेजा कि शांति ही परम सत्य है। इसे चुनौती मान बादशाह ने उडेरोलाल पर आक्रमण कर दिया। बादशाह का दर्प चूर-चूर हुआ और पराजय झेलकर उडेरोलाल के चरणों में स्थान माँगा। उडेरोलाल ने सर्वधर्म समभाव का संदेश दिया। इसका असर यह हुआ कि मिरक शाह उदयचंद का परम शिष्य बनकर उनके विचारों के प्रचार में जुट गया। झूलेलाल की शक्ति से प्रभावित होकर ही मिरक शाह ने अमन का रास्ता अपनाकर बाद में कुरुक्षेत्र में एक ऐसा भव्य मंदिर बनाकर दिया, जो आज भी हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक और पवित्र स्थान माना जाता है।

भगवानल श्री झूलेलाल को जिंद पीर और लालशाह के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू धर्म में भगवान झूलेलाल को उडेरोलाल, लालसाँई, अमरलाल, जिंद पीर, लालशाह नामों से भी जाना जाता है। इन्हें जल के देवता वरुण का अवतार माना जाता है। उपासक भगवान झूलेलाल को उडेरोलाल, घोड़ेवारो, जिन्दपीर, लालसाँई, पल्लेवारो, ज्योतिनवारो, अमरलाल आदि नामों से पूजते हैं। चैत्र मास के चन्द्र दर्शन के दिन भगवान झूलेलाल की जयंती संपूर्ण विश्व में चेटीचंड के त्योहार के रूप में परंपरागत हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है। भगवान झूलेलालजी को जल और ज्योति का अवतार माना गया है, इसलिए काष्ठ का एक मंदिर बनाकर उसमें एक लोटी से जल और ज्योति प्रज्वलित की जाती है। मंदिर को श्रद्धालु चेटीचण्ड के दिन अपने सिर पर उठाकर, जिसे बहिराणा साहब भी कहा जाता है, भगवान वरुण देव का स्तुतिगान करते हैं एवं समाज का परंपरागत नृत्य छेज करते हैं। इस दिन नई मन्नतें भी ली जाती है। झूलेलाल मंदिरों में समाज के लोग शिशुओं को मुंडन भी कराते है। चेटीचण्ड के दिन झूलेलाल मंदिरों में प्रसादी-भण्डारा का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी धर्मों और समाज के लोग शामिल होते हैं। इस दिन विशाल शोभायात्रा का भी आयोजन होता है। इसमें सिन्धी सभ्यता और संस्कृति की झलक दिखलाती विभिन्न झांकियां होती है साथ ही सिन्धी कलाकारों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियां भी दी जाती है। चेटीचण्ड उमंग और उत्साह के साथ सभी वर्गों के लोग मिलकर मनाते है।

## कविता

## कामकाजी महिला

अल सुबह ही शुरुआत होती उसके दिन की,
सबका नाश्ता, बच्चों के टिफिन, दोपहर का खाना,
सबका काम करते-करते भागते हुए पहुंचती है ऑफिस।
चाहती है जल्दी निपटाना ऑफिस का हर काम,
लेकिन फिर काम निपटाते निपटाते हो जाती है शाम,
और फिर वह लौटती है वापस अपने घर,
नहीं।
दरअसल स्त्री घर लौटकर भी काम पर ही लौटती है,
उसे इंतजार रहता है उस फुर्सत भरे इतवार का,
जिसमें जी सके वह जिंदगी के कुछ हसीन पल,
बच्चों के साथ, पति के साथ और कुछ पल,
अपने साथ...
फिर आता है रविवार और शुरू हो जाती है,
फरमाइशें
कुछ अच्छे नाश्ते की, कुछ गरमा गरम खाने की,
बच्चों की खुशी के लिए करती फरमाइशों को पूरा,
फिर कुछ हफ्ते भर के अधूरे कामों को समेट कर जैसे
ही करने जाती है आराम, तो हो
जाती है शाम
निकल जाता है पूरा इतवार वापस गृहस्थी को
समेटते समेटते....
फिर वापस जाती वह रसोई घर में
अगली सुबह की तैयारी करने
और फिर उस फुर्सत भरे रविवार के इंतजार में
गुजार देती है पूरा सप्ताह
मशीन की तरह चलते-चलते
कामकाजी महिला की जिंदगी
कभी ना खत्म होने वाले काम
और कभी न खत्म होने वाली जिम्मेदारियां...

**- हेमा मलानी, आदर्श नगर, जयपुर।**

## राजस्थान की जनता को मिलेगा आध्यात्मिक व सांस्कृतिक उपहार

जयपुर (नि.सं.)। गौरवशाली सांस्कृतिक प्रथा से समाज के हर एक व्यक्ति को जोड़ने के लिए हरे कृष्ण मूवमेंट राजस्थान की जनता को एक अमूल्य उपहार के रूप में 'हरे कृष्ण कल्चर सेंटर' देने जा रहा है। राजस्थान की राजधानी जयपुर में एक अविश्वसनीय, अत्याधुनिक मंदिर और सांस्कृतिक केंद्र का निर्माण हो रहा है। जिसका नाम है हरे कृष्ण कल्चर सेंटर। यह भव्य सांस्कृतिक केंद्र हरे कृष्ण मार्ग, जगतपुरा पर 6 एकड़ भूमि में बनाया जा रहा है, यह प्रोजेक्ट 2027 तक पूरा होने की संभावना है जिसका काम तेज गति से चल रहा है। जयपुर के हॉलिडे इन् में शनिवार को एक विशेष कार्य म का आयोजन किया गया। जिसमें साईं गिरधर, मुकुंद गोयल, मोहित साहनी, पारिजात अग्रवाल, अमित गुप्ता, ओम प्रकाश मोदी और मुकुट बिहारी गोयल सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

Geeken presents iTVoice EXPO 2024

# Volunteer Meet-Up





Dr. Tarun Kumar Taunk, CEO & Chief Editor - IT Voice Media



























स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक तरूण कुमार टांक के लिये महारानी प्रिन्टर्स प्लाट नं. 17, माँ वैष्णो देवी नगर, कालवाड़ रोड, जयपुर से मुद्रित एवं 52/121, वीरतेजाजी रोड, मानसरोवर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-तरूण कुमार टांक Email: mahanagarstambh@gmail.com